**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

# महात्मा गांधी का भारतोय स्वच्छता आदोंलन में योगदान

**डॉ. परविन्द्रजीत सिंह**
**प्राचार्य**
**संत श्री प्राणनाथ परनामी पी जी कॉलेज पदमपुर**

**सारांश –**

महात्मा गांधी जीवन में स्वच्छता बड़े हिमायती थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वह सिर्फ बाहरी स्वच्छता यानी घर, पास–पड़ोस आदि के ही पक्षधर नहीं थे, बल्कि मन की स्वच्छता के भी प्रबल पक्षधर थे। उनका यह मानना था कि यदि मन और पड़ोस स्वच्छ नहीं होगा, तो अच्छे, सच्चे एवं ईमानदार विचार आना असंभव है। आंतरिक स्वच्छता को वह वाह्य स्वच्छता के लिए आवश्यक मानते थे। अपने इस दृष्टिकोण का उन्होंने एक पत्र में इस प्रकार रेखांकित किया – ''वह जो सचमुच में भीतर से स्वच्छ है, वह अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता।'' एक सुन्दर, पवित्र, समरस और बुराइयों से मुक्त समाज के निर्माण के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छता दर्शन से श्रेष्ठ कोई अन्य दर्शन नहीं हो सकता। वि"ाल व्यक्तित्व को लेकर वि"व पुरूष के रूप में गाँधी जी इतिहास के क्षितिज पर उभरे। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी जी का प्रवे"ा 20वीं सदी की सबसे बड़ी घटना है। वह हम भारतीयो के जीवन में प्रका"ा पुंज की तरह आये और आने के साथ ही उन्होंने पूरे समाज को उस विराट स्वरूप की झांकी दी जिसे हम सदियों से भूले हुए थे। एक जादू हुआ, व्यक्ति और समाज पर छाई भय की काली छाया छट गई और आत्म वि"वास तथा निर्भय सकर्म का अरूणोदय हुआ।

शब्द संकेत – स्वच्छता, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

**प्रस्तावना –**

महात्मा गांधी ने सदैव समग्र स्वच्छता की पैरोकारी की और सम्पूर्ण स्वच्छता के लिए इसे आवश्यक बताया। यही कारण है कि उन्होंने सिर्फ व्यक्तिगत स्वच्छता पर बल नहीं दिया, अपितु समग्र रूप से सामाजिक स्वच्छता पर विशेष बल दिया। कहा कि यदि कोई व्यक्ति

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

अपनी स्वच्छता के साथ दूसरों की स्वच्छता के प्रति संवेदनशील नहीं है, तो ऐसी स्वच्छता बेईमानी है। उदाहरण के तौर पर इसे अपना घर साफ कर कूड़ा दूसरे के घर के बाहर छोड़ने के रूप में लिया जा सकता है। यदि सभी लोग ऐसा करने लगें, तो ऐसे तथाकथित स्वच्छ लोग अस्वच्छ वातावरण तथा अस्वच्छ समाज का ही निर्माण करेंगे। उन्होंने हमें यह सीख दी कि यदि व्यक्तिगत स्वच्छता में सामूहिक स्वच्छता के प्रति उत्तरदायित्व का बोध नहीं हो, तो ऐसी स्वच्छता सिर्फ दिखावा है।

आंतरिक स्वच्छता की महत्ता को महात्मा गांधी ने 10 दिसंबर, 1925 के यंग इंडिया के अंक में कुछ इस प्रकार रेखांकित किया था "आंतरिक स्वच्छता पहली वस्तु है, जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य बातें प्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पाठ सम्पन्न होने के बाद लागू की जानी चाहिए।" वह मानव प्रगति के लिए आंतरिक ओर बाहरी स्वच्छता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने स्वच्छता को आत्मविकास एवं राष्ट्रविकास का सबसे महत्वपूर्ण अवयव माना और इसे इस प्रकार स्पष्ट किया – " एक पवित्र आत्मा के लिए एक स्वच्छ शरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि किसी स्थान, शहर, राज्य और देश के लिए स्वच्छ रहना जरूरी होता है, ताकि इसमें रहने वाले लोग स्वच्छ और ईमानदार हों।" स्वच्छता का उनका दर्शन अत्यंत व्यापक था। इस व्यापकता को उन्होंने यह कह कर व्यक्त किया कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। और यदि वह स्वस्थ नहीं है, तो वह स्वस्थ मनोदशा के साथ नहीं रह पाएगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होगा।

महात्मा गांधी ने हमें सिर्फ स्वच्छता की कोरी सीख ही नहीं दी, बल्कि इसे स्वयं अपने निजी जीवन में उतार कर प्रेरक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। साबरमती आश्रम की साफ–सफाई एवं पेड़–पौधा की देखभाल वह स्वयं ही करते थे। सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने साफ–सफाई का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया। वहां महात्मा गांधी जिस बस्ती में रहते थे, उस बस्ती, उसके आस–पास के क्षेत्र और शहरों की

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

सफाई में उन्होंने बढ़–चढ़ कर योगदान दिया। यह वाकिया उन दिनों का है, जब डरबन की एक भारतीय बस्ती में प्लेग फैला। इस विषम स्थिति में महात्मा गांधी ने न सिर्फ बीमारों की सेवा का बीड़ा उठाया, बल्कि प्लेग के प्रसार को रोकने के लिए वहां जमकर सफाई अभियान चलाया। ऐसा करते हुए उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि वह स्वयं भी प्लेग की चपेट में आ सकते हैं।

महात्मा गांधी ने स्वच्छता का सबक सिर्फ जनसाधारण को ही नहीं दिया, अपितु निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र के निकायों में भी स्वच्छता बढ़ाने पर बल दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक संगठन में ऊपर से लेकर नीचे तक प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी है कि वह अपने प्रचालन स्थल के पर्यावरण को गंदा अथवा प्रदूषित न करे। सरकारें और नगर परिषदें कुछ सीमा तक प्रयास कर सकती हैं। उनकी अपनी सीमाएं होती हैं, लेकिन यदि हर व्यक्ति इसे अपनी जिम्मेदारी और कर्त्तव्य समझे, तो न केवल भारत को एक स्वच्छ राष्ट्र बनाने का लक्ष्य हासिल करना अधिक संभव होगा, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भारतीय स्वच्छ बन पाएंगे और तब वे एक स्वच्छ राष्ट्र, एक स्वच्छ सभ्यता और एक स्वच्छ व्यक्ति होने का उदाहरण बनकर गर्व महसूस कर सकेंगे।

एक प्रेरक उदाहरण – उन दिनों कोलकाता में कांग्रेस का सम्मेलन चल रहा था। इसमें सम्मिलित होने के लिए महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से आए थे। कार्यक्रम स्थल पर व्याप्त गंदगी और अस्वच्छता को देखकर वह व्याकुल हो उठे। उन्होंने आगे बढ़ कर वहां स्वयं सफाई का काम शुरू कर दिया। यहां तक कि शौचालयों की भी सफाई की और उन्हें ढंका भी। इसके साथ ही उन्होंने सम्मेलन में सम्मिलित होने आए प्रतिनिधियों को दिए अपने भाषण में स्वच्छता के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

आज भारत में बहने वाली नदियों की दयनीय दशा किसी से छिपी नहीं है। पावन कहलाने वाली नदियां प्रदूषण का दंश झेल रही हैं। नदियों को प्रदूषित करने में हमारा ही योगदान है। महात्मा गांधी ने बहुत पहले ही इस बारे में आगाह करते हुए कहा था कि

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

नदियां हमारे देश की नाड़ियों की तरह हैं और हमारी सभ्यता हमारी नदियों की स्थिति पर निर्भर है। यदि हम उन्हें गंदा करना जारी रखेंगे, जिस तरह से हम कर रहे हैं, वह दिन दूर नहीं, जब हमारी नदियां जहरीली हो जाएंगी और यदि ऐसा हुआ तो हमारी सभ्यता नष्ट हो जाएगी। हम पर्यावरणीय आपदा के मुहाने पर खड़े हैं, क्योंकि हमने अपनी सबसे पवित्र नदी गंगा को प्रदूषित कर डाला है। महात्मा गांधी ने इस बात को लेकर चिन्ता व्यक्त की थी कि लोग नदियों में गंदगी को बहाते कैसे हैं। यदि तब हमने महात्मा गांधी की बातों पर अमल किया होता, तो आज हमारी नदियों का यह हश्र न होता।

महात्मा गांधी ने स्वच्छता के लिए न सिर्फ व्यावहारिक पहले कीं, अपितु व्यावहारिक सीख भी दी। स्वच्छता के लिए उन्होंने जनसहभागिता और जनजागरूकता पर विशेष बल दिया और साफ–सफाई के लिए आत्म–प्रेरित प्रयासों को आवश्यक माना। स्वच्छता को सामूहिक जिम्मेदारी बताते हुए उन्होंने यह रेखांकित किया कि इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को चिन्ता करनी होगी और जिम्मेदारी लेनी होगी। स्वच्छता चेतावनियों, कानूनों अथवा अध्यादेश जारी करके इसे हासिल नहीं किया जा सकता। इसे आदत में शामिल करके ही हासिल किया जा सकता है।

वह अपनी छोटी उम्र में ही यह जान गए और पूरी जिंदगी ऐसा महसूस करते रहे। उनको पता था कि भारत में सफाई और स्वच्छता की स्थिति वास्तव में अच्छी नहीं है और ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त शौचालय की कमी के लिए उतने ही प्रयास किए जाने चाहिए जितने स्वराज्य प्राप्त करने के लिए। उन्होंने आगे कहा कि जब तक हम लोग, "अपनी गंदी आदतों से छुटकारा नहीं पा जाते और शौचालयों मे सुधार नहीं कर लेते तब तक स्वराज्य का कोई महत्व नहीं हो सकता।" उन्होंने पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर भारत में स्वराज्य के लिए संघर्ष करते हुए सफाई, स्वच्छता और कचरे के प्रभावी प्रबंधन के लिए अपना संघर्ष जारी रखा। सन् 1947 में आजादी हासिल करने के एक साल बाद गांधी जी की हत्या कर दी गई लेकिन सफाई और स्वच्छता के उनके विचार को लिखित और

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

भावात्मक दोनों रूपों में लगातार फैलते रहे।

पहले तो यह केवल एक विचार था लेकिन सन् 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इसको एक स्वच्छ भारत अभियान के रूप मे शुरू करने के बाद इसने राष्ट्रीय जन आंदोलन का आकार ले लिया। सन् 2014 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतवासियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में 'स्वच्छ भारत' का भी जिक्र किया था। उन्होंने कहा, "हम महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ का जश्न कैसे मनाते हैं? सफाई और स्वच्छता महात्मा गांधी के दिल के सबसे करीब थी। क्या हम लोग, जब 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ मनाएंगे तो हम अपने गाँव, शहर, इलाके, स्कूल, मंदिर अस्पताल और जो भी जगहें हमारे पास हैं वहाँ पर गंदगी का एक धब्बा तक न रखने का सकल्प नहीं लेते हैं? यह केवल सरकार ही नहीं बल्कि जनता की भागीदारी से होता है। इसीलिए यह हम लोगों को एक साथ मिलकर करना है।" इस राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान 'स्वच्छ भारत अभियान' को 2 अक्टूबर 2014 को लागू कर दिया गया था, इस योजना का उद्देश्य 2019 तक भारत का पूरी तरह से स्वच्छ बनाना था। मोदी ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन राष्ट्रभक्ति से प्रेरित और राजनीति से परे है। उनके इस विचार ने लोगों के विचारों को गांधी के स्वच्छता के विचारों में बदल दिया।

गांधी जी ने एक बार कहा था कि, "हिंदुस्तानियों पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि उनकी आदतें बहुत ही बेहुदा होती हैं और वे अपने घर तथा आस–पड़ोस को साफ सुथरा नहीं रखते हैं३लेकिन मुझे कुछ कड़वे अनुभव थे। मैंने देखा कि मैं जनता को सफाई के प्रति उनके कर्तव्यों को उतनी आसानी से नहीं गिना पा रहा था जितनी आसानी से उनको उनके अधिकारों के बारे में बता रहा था। कुछ जगहों पर तो मेरा तिरस्कार भी किया गया, पर कुछ जगहों पर मुझे विनम्र उदासीनता मिली। अपने आस पड़ोस को साफ रखने के लिए लोगों को मानसिक तौर पर तैयार होना बहुत ही ज्यादा था। इस काम के लिए लोगों से पैसों की उम्मीद रखने का तो कोई सवाल ही नहीं था। इन अनुभवों से मुझे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

पहले से कहीं बेहतर सबक मिला कि असीमित धैर्य के बिना लोगों से कोई भी काम करवाना असंभव था। यह सुधारक है जो कि सुधार को लेकर चिंतित है, न कि एक समाज, जिससे उसको विराध, घृणा और यहां तक कि प्राणघातक उत्पीड़न के सिवा कुछ भी बेहतर चीज पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।"

**गांधी जी के जीवन में सफाई और स्वच्छता का महत्व –**

महात्मा गांधी की अगुवाई में भारत आजाद तो हो गया लेकिन स्वच्छ भारत की उनकी इच्छा अभी भी पूरी नहीं हुई। उन्होंने कहा था, "स्वतंत्रता से स्वच्छता अधिक महत्वपूर्ण है" और आगे कहा, "जब तक आप अपने हाथों में झाड़ू और बाल्टी नहीं लेते हैं, तब तक आप अपने कस्बों और शहरों को साफ नहीं कर सकते। सफाई और स्वच्छता गांधीवादी जिंदगी गुजारने का एक अभिन्न अंग था। उन्होंने सभी के लिए एक पूर्ण सफाई का एक सपना देखा था। उन्होंने शारीरिक कल्याण और एक स्वस्थ वातावरण के लिए सफाई को एक महत्वपूर्ण अंग माना था। इसलिए, स्वच्छता, सफाई और स्वास्थ्य के बारे में जानना बहुत जरूरी है। जो आदतें आदमी अपने बचपन में सीखता है वे उस व्यक्ति के साथ एक लंबा रास्ता तय करती हैं और उसकी शख्सियत का एक हिस्सा बन जाती हैं। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि स्वच्छता लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करती है। महात्मा गांधी ने सफाई और स्वच्छता के इस विचार को ध्यान में रखते हुए कहा था कि "मैं किसी को भी अपने गंदे पाँव के साथ मेरे मन से नहीं गुजरने दूंगा।"

हालांकि, गांधी ने स्वच्छता को छोड़कर बाकी कई पश्चिमी रीति–रिवाजों का मजाक उड़ाया। पश्चिम में रहते हुए वे लोगों के स्वच्छता के स्तर से काफी प्रभावित थे। यही देखकर गांधी भारत में स्वच्छता के लिए इतने उत्सुक हो गए थे। भारतीयों की गंदी आदतों की ओर इशारा करते हुए गांधी ने शौचालयों में सफाई रखने पर बल दिया और लिखा, "मुझे एक बिन्दु पर अपना बचाव करना होगा, जिसका नाम है दृ शौचालय सुविधाएं। मैंने करीब 35 साल पहले सीखा था कि शौचालय को बैठक कक्ष की तरह स्वच्छ होना चाहिए। यह मैंने

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

पश्चिम से सीखा था। मेरा मानना है कि शौचालयों में स्वच्छता के बारे में पूर्व की तुलना में पश्चिम में नियमों को अधिक स्पष्ट रूप से देखा जाता है। हमारी कई बीमारियों की वजह हमारे शौचालयों की स्थिति और हमरी किसी भी जगह पर मलमूत्र करने की बुरी आदत है। इसलिए मैं जरूरत पड़ने पर मल–मूत्र त्यागने के लिए पूरी तरह से साफ सुथरी जगह की आवश्यकता में भरोसा करता हूँ। मैंने खुद को इसका आदी बना लिया है और चाहता हूँ कि सभी लोगों को ऐसा ही करना चाहिए। इस आदत का मैं इतना ज्यादा आदी हो गया हूँ कि अगर इसको बदलना चाहूँ तब भी नहीं बदल पाऊंगा। न ही मैं इसे बदलना चाहता हूँ।"

सफाई और स्वच्छता को लेकर गांधी जी को व्यक्तिगत रूप से खुद कई बार सफाई करते हुए देखा गया था। उनका ऐसा ही एक कार्य 1915 में देखने के मिला था जब वे हरिद्वार के कुंभ मेले में भाग लेने के लिए गए थे।

गांधी हिन्दू रूढ़िवादिता को स्वीकार नहीं करते थे और इसका सबसे पहला जिक्र उनकी जीवनी में मिलता है। जहाँ पर वे अपनी माता से पूछते हैं कि उन्हें किसी 'अछूत' को छूने से क्यों रोका जाता है। गांधी ने सफाई को छुआछूत के साथ जोड़ने के विचार का खंडन किया। गांधी को यह बात बहुत ही अनुचित लगी कि सफाई के काम को समाज में बहुत ही गिरी नजर से देखा जाए। उन्होंने भारतीयों में सफाई और स्वच्छता से जुड़ी शिक्षा की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि "सफाई काय भारत में एक विशेष कार्य होना चाहिए।" उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हर कोई खुद में ही एक सफाई कर्मी होना चाहिए।

गांधी ने, गुजरात में एक राजनीतिक सम्मेलन के दौरान लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि गंदी सड़कों, घरों और रास्तों से हमारे घरों में महामारी फैल सकती है। उन्होंने कहा, "अगर हम भारत से महामारी को खत्म कर देते हैं तो हम स्वराज्य के लिए और ज्यादा मजबूत हो जाएंगे।" उन्होंने साफ पानी पीने, अच्छी हवा में सांस लेने और खुले में शौच से निपटने के लिए स्पष्ट तरीकों का पालन करक महामारी को भारत से उखाड़ फेंकने पर जोर दिया।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

गांधी के सत्याग्रह अभियान में निजी और सार्वजनिक स्वच्छता के मुद्दों को लेकर उनकी चिंता शामिल थी। गोरों ने घोषणा कर दी थी कि भारतीय गंदे होते हैं और इनको अलग रखा जाना चाहिए, इस घोषणा को खत्म करना ही गांधी की प्राथमिकता बन गई थी। इससे निपटने के लिए उन्होंने विधानसभा को एक खुला पत्र लिखा कि भारतीय भी यूरोपीय लोगों की तरह साफ सुथरे रहने के लायक हैं बशर्ते कि उनको समान मौका और मान्यता मिलना चाहिए। हालांकि, गांधी को भारतीयों को जैवन शैली में स्वच्छता की कमी के बारे में पता था और भारतीयों को पूरी तरह से स्वच्छता पर विचार करने की जरूरत पर जोर दिया गया था। गांधी ने भारतीयों के साथ होने वाली अपनी बैठकों में छुआछूत के मुद्दों पर बात करते हुए सफाई और स्वच्छता से संबंधित मद्दों का भी जिक्र किया।

**गांधी के सफाई और स्वच्छता के विचार दक्षिण अफ्रीका प्रभावित हुए–**

जब गांधी दक्षिण अफ्रीका में थे तो छुआछूत और अस्वच्छता को खत्म करने का विचार अपने आप उनके मन में आया। उनके लिए स्वच्छता अभियान समाज का एक मौलिक हिस्सा था जिसमें एक जातिहीन समाज निर्मित करने की क्षमता होती है। अपने आप सफाई करने और छूआछूत के मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि, "हर कोई खुद का सफाई कर्मी है।" और यह विचारधारा एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज का निर्माण करने और छुआछूत को खत्म करने लिए जरूरी है। गांधी भारतीयो को दिए गए 'अशुद्ध ' टैग को खत्म करने के लिए स्वच्छता को एक जरूरी घटक मानते थे। भारतीयों को पश्चिमी देशों में चलाए गए सभ्यता मिशन की सख्त जरूरत थी।

दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गांधी ने भारतीयों को अपने विचारों से अवगत करवाया और उन्हें शौच पर सूखी राख या धूल डालने और शौचालय को साफ और सूखा रखने के लिए प्रेरित किया। अपने 'गाइड टू लंदन' में रोजाना स्नान की जरूरत पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि "स्वच्छता भक्ति से बढ़कर है।" दूसरे लेख "अवर इनसेनिटेशन" में उन्होंने लिखा है कि "वीरों, स्वराज्य केवल स्वच्छता द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।"

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, January- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

महात्मा गांधी को स्वच्छ भारत का आइकन चुनकर, भारत ने एक बार फिर से राष्ट्रपिता में अपना विश्वास जता दिया है। आमतौर पर एक क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े बिना ही गांधी हर तरह से एक क्रांतिकारी थे। हर भारतवासी के जीवन में सफाई और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए गांधी जी द्वारा किए गए प्रयास वाकई में तारीफ के लायक हैं। वह स्वच्छता की मशाल को भारत सहित कई देशों में वह क्रांति प्राप्त करने करने के लिए खुद लेकर गए जिसे वे देखना चाहते थे। अगले साल महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ मनाई जानी है। यह हर भारतीय की जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ भविष्य वाले भारत का उनका सपना पूरा करने के लिए एक स्वच्छ देश बनाने में बढ़चढ़ कर हिस्सा लें।

**संदर्भ सूची –**

1. डॉ राजेन्द्र प्रसाद, सत्याग्रह इन चंपारण, द्वितीय संस्करण, सितंबर 1949,पृ0–10
2. P.C Roy Chaudhary, District Cazeetter of Champaran, Bihar. Patna.1960,P-55
3. डॉ के0के0दत्त, बिहार में स्वातंत्रता आन्दोलन का इतिकास, खंड–1, द्वितीय संस्करण 1998,पृ–180
4. डॉ. अजित कुमार, बिहार में अंग्रेजी राज और स्वतंत्रता आन्दोलन (1764–1947) उषा प्रकाशन, पृ0–97
5. डॉ. के0के0 दत्त, पूर्वोक्त पृ0–182
6. प्रो. कौलेश्वर राय, बिहार का इतिहास, किताब महल, चतुर्थ संस्कारण 2013, पृ0–428
7. मेहनदास करमचंद गाँधी, एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोग, पृ0–97
8. डॉ के0के0दत्त, पूर्वोक्त पृ0–287–288
9. प्रो0 कौलेश्वर राय, पूर्वोक्त पृ0– 440